ISSN No. (P) 0976-5255, (e) 2454-339X
ICRJIFR
IMPACT FACTOR
3.8942

शोध मंथन

छायावादी कवि पं. मुकुटधर पाण्डेय जी के काव्य में ह्रदय एवम् वाणी के अनुबंध

डॉ. बृजेन्द्र पाण्डेय*
सहायक प्राध्यापक
मानव संसाधन विकास केन्द्र
पं रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय,रायपुर

छायावाद के प्रवर्तक श्री मुकुटधर पाण्डेय जी ऐसे जागरूक साहित्यकार थे, जो नवीनता की प्रतिष्ठा के साथ जीवन और जगत के दायिष्णु तत्वों को भली–भांति पहचानते थे। आम जनता के लिए यथार्थ मानववाद की संकल्पना करने वाली सोच के साथ विशाल मानवता से सामंजस्य की तीव्र आकांक्षा भी उनकी रचनाओं में स्पष्ट दिखाई देती है। कवि की कलम से जहाँ एक ओर परिताप से युक्त ''कुररी के प्रति'' लिखी गई कविता है, वहीं दूसरी ओर श्रम साधना, तथा श्रम शोषण का विरोध करने वाली कविताएँ– खोमचावाला किसान, बाल परिचायक, खलिहान, आदि कविताएँ भी लिखी गई हैं, अव्यक्त के प्रति कौतुहल पूर्ण दृष्टि के साथ कवि ने ठेला–गाड़ी से लेकर रोजमर्रा, दैनिक दिनचर्या पर भी अपनी लेखनी चलाई। कवि के काव्य संसार में प्रवेश करते ही अनायास कुछ प्रश्न मनोमस्तिष्क में उठ खड़े होते हैं, निस्तब्ध रात्रि के नीरव गहनता में विलाप करती कुरती कुररी के ह्रदय–विदारक करूणासिक्त रूदन करने वाला कवि सहसा श्रम साधना की महत्ता पर कैसे विचार करने लगा ? इन प्रश्नों का उत्तर उनके जीवन में घटित दो घटनाओं से संभवतः हुई हो। प्रथम तो पूज्य पिता जी का देहावसान एवम् द्वितीय बाल्यकाल की बिदाई, गांव का छूटना, जिसके परिणाम स्वरूप कवि का तप्त ह्रदय और अधीर हो उठता है। जीवन के कटु सत्यों ने पाण्डेय जी के भाव संसार को करूण दृष्टि से उठाकर मानव–दृष्टा बना दिया।

महानदी के सुरम्य तट पर प्रकृति के सानिध्य में विचरती कवि की कोमल मधुर, सुकुमार भावनाओं ने प्रकृति की कठोरता, निष्ठुरता, नृशंसता, को आत्मसात, करना आरंभ कर दिया, और कवि ह्रदय ने महसूस करना आरंभ कर दिया था कि, सदैव ही आनन्द और उल्लास का सुख नहीं मिलता। जीवन का अर्थ जिजीविषा एवं संघर्ष होता है। ग्रामीण संस्कार, संस्कारगत सहजता, सरलता, प्रकृति के प्रति मुग्ध भाव से कवि ने कविता संसार की। विषय वस्तु के चयन में कवि ने काव्यगत विविधताओं का समावेश किया। प्रभाती, शोकांजलि, आँसू, ओस की निर्वाण प्राप्ति, जुगनू, लज्जा, त्रस्त, कुररी के प्रति, तटनी के प्रति, किंशुक कुसुम, किसलय के प्रति, आर्द्रमेंध के प्रति अंतिम पुष्प, महानदी आदि ऐसी कविताएँ हैं, जिनमें विशेष छायावादी काव्य

शैली का प्रस्कुटन हुआ एवम् उक्त कविताएँ द्विवेदीयुगीन छंदबद्धता और छंदशुद्धता के मान्यता के विपरीत थे। पाण्डेय जी ने छंदबद्धता की सीमा को तोड़ते हुए कविता को वाणी और ह्रदय का अनुबंध बताया। आध्यात्मिक तथा प्राकृतिक रहस्यों के प्रति जिज्ञासा के भाव के साथ गीत शैली को जन्म दिया, जो कालान्तर में अन्य छायावादी कवियों के लिए मार्गदर्शक बनी। सादगी और सरलता के साथ पूर्वनिर्मित पथ से हटकर विषय चयन, विषय के प्रति पूरा–पूरा न्याय पाण्डेय जी की काव्यगत विशेषता है। काव्यगत भाषा शैली ही कवि की पहचान का माध्यम होता है, विषय वस्तु, शब्द, विधा की समानता तो हो सकती है, परन्तु काव्य की विशिष्टता भाषा के वैज्ञानिक विश्लेषण, एवम् भाषा शौली से होती है। काव्य भाषा का विशिष्ट स्तर तथा विशिष्ट संदर्भ मिलकर काव्य शैली को विशिष्टता प्रदान करते हैं।

पाण्डेय जी की भाषा अवधी से मिलती जुलती खड़ी बोली है। द्विवेदी युगीन काव्य की भाषा ब्रजभाषा थी। हिन्दी को राष्ट्रभाषा की सेवा, देश सेवा के समकक्ष मानने के कारण, और खड़ी बोली में गद्य के विकास की संभावनाओं को दृष्टिगत रखते हुए पाण्डेय जी ने भी खड़ी बोली को काव्य की भाषा बनाया। प्रारंभ में पाँच, छः दशक तक पंडित जी की काव्य शैली संशिलष्ट रही। भाषा में संस्कृत के प्रति उनका विशेष अनुराग स्थान–स्थान पर प्रयुक्त संस्कृत शब्दावलियों से होता है। इसी तरह उनके काव्य में बंगला, उड़िया और अंग्रेजी के उद्धरण से विविध भाषा, ज्ञान व पांडित्य का पता चलता है। पाण्डेय जी की भाषा बिना किसी से प्रभावित हुए मौलिक उद्भावना लिये हुए है, भाषा भावों को वहन करने में पूर्णतः सफल रही है। प्रायः भाषा सरल होते हुए भी गंभीर भावों को ग्रहण कर संस्कृतनिष्ठ एवम् प्रांजल हो जाती है, तो कल्पना के घुमावदार अस्पष्ट भावों से अधीष्ठित होकर अलांकारिक व काव्यात्मक हो उठती है।

पाण्डेय जी की कविता भाषाबद्ध भाव नहीं भावबद्ध भाषा है। पंडित जी के शब्दों में ''कविता ह्रदय का सहज उद्गार है...................वाद तो बदलते रहते है, पर कविता में एक ह्रदय वाद होता है, जो कभी नहीं बदलता.................। उक्त कथन साप्ताहिक 'दिनमान' 18–24 सितम्बर, 1983 तथा विश्वबोध के आवरण पृष्ठ में मुद्रित है। पाण्डेय जी ने भाषा को अनुवाद की प्रक्रिया से भिन्न भावों की छाया कहा है, तथा भाषा एवम् कविता की सार्थकता दोनों की परस्परता में निहितार्थ बताया है। पाण्डेय जी का भाव पक्ष प्रौढ़, प्रमुख, एवम् सारगर्भित हैं, कविता का जन्म प्रयास साध्य नहीं होने के कारण एवम् स्वयं उद्भूत होने की वजह से अभिव्यक्ति प्रांजल एवम् प्रवेगपूर्ण है। पंडित जी ने भाषा को भावों में ढालने से पहले उसे ह्रदय के ताप में गलाकर कोमल करूण, सरल एवम् प्रांजल बना दिया है।

छायावाद को परिभाषिक शब्दावली में बांधने का कार्य सर्वप्रथम पं. मुकुटधर पाण्डेय जी ने सन् 1920 में ''श्री शारदा'' नामक पत्रिका के माध्यम से किया। ''हिन्दी में छायावाद'' नामक उक्त लेखमाला तत्कालिक छायावाद संबंधी चर्चा के लिए महत्वपूर्ण निबंध था। छायावाद को परिभाषित करते हुए पं. मुकुटधर पाण्डेय जी ने स्वच्छन्दतावादी कविता का पक्ष लिया, तथा हिन्दी की तत्कालिन द्विवेदी युगीन कविता पर असंतोष प्रकट किया। 'छायावाद' शब्द का प्रयोग पाण्डेय जी ने 'मिस्टीसिज़्म' के लिए किया था। उन्होंने स्पष्ट किया कि ''परोक्ष सत्ता के प्रति अस्पष्ट रूप से व्यक्त भावों की रचना ही छायावाद है।'' पाण्डेय जी ने मिस्टीसिज़्म की विषय वस्तु से ज्यादा अभिव्यक्ति की प्रणाली या शैली को महत्व दिया।

''हुआ प्रथम जब उनका दर्शन
गया हाथ से निकल तभी मन'''
–पं. मुकुटधर पाण्डेय

अंतर्मुखी रचना की लाक्षणिक अभिव्यक्ति छायावाद के अंतर्गत आ जाती है। अस्वष्ट और संकेतात्मक अभिव्यक्ति वाली रचना को जिसमेंआलंबन चाहे लौकिक हो या अलौकिक छायावादी रचना कहा गया। स्वयं पाण्डेय जी ने कहा था, छायावाद लिखा नहीं जाता, लिख जाता है। पाण्डेय जी अपने बारे में विनम्रता से लिखते हैं कि, ''मेरी रचनाओं में चाहे लोग जो भी खोज लें, परन्तु वे विशुद्ध रूप से मेरी आंतरिक सहज अभिव्यक्ति मात्र है।''

पाण्डेय जी की रचनाओं में, ''कुररी के प्रति'' में छायावाद की समग्र नूतन प्रवृत्ति अंतर्निहित है।

बता मुझे ऐ विहग विदेशी ! अपने जी की बात
पिछड़ा था तु कहाँ आ रहा जो कर इतनी रात।
(कुररी के प्रति)

द्विवेदी युग की काव्य छनद बद्धता की परिपाटी को तोड़ते हुए पाण्डेय जी करते हैं :—

काव्य नहीं केवल छनद प्रबंध ।
वाणी और ह्रदय का वह अनुबंध।।

पाण्डेय जी ने गद्य व पद्य दोनों में लिखा, आपने गीत शैली को जन्म दिया। छायावादी लेख माला के अतिरिक्त, कविता, भविष्य में हिन्दी का रूप क्या हो, गीतांजलि में दुःख, रसवाद, प्रकृति चित्रण, परित्यक्ता—श्री जानकी, कालिदास का आदर्श स्थापन, विनय पत्रिका में उक्ति वैचिन्र्य एवं अर्थ गौरव आदि विषयों पर भी निबंध लिखा। पाण्डेय जी का काव्य सहज और सरल है अंतः सौन्दर्य और अध्यात्मिक भावनाओं से युक्त आपके काव्य संसार में वास्तिवक संसार का भी स्थान है। नैसर्गिक सौन्दर्य बोध के साथ आपने शब्दों के आडंबर और वाग्जाल को सदैव अपने से दूर रखा। एक सहज अनुभूति के साथ आपका छायावाद काव्य जगत में भावुकतापूर्ण अध्यात्मिकता की प्रतिष्ठा करता है।

यथा :— ''भूत, भविष्यत् वर्तमान पर होती है जिसकी सम दृष्टि
प्रतिभा जिसकी मर्त्यधाम में करती सदा सुधा की वृष्टि
जो करूणा श्रृंगार, हास्य वीरादि नवों रस का आधार
जिसको ईश्वरीय तत्वों का अनुभव युत है ज्ञान—अपार।''
''कवि'' से साभार (पाण्डेय जी)

पं. मुकुटधर पाण्डेय जी छायावाद के प्रवर्तक माने जाते हैं, इनकी कविता 'कुररी के प्रति' से ही छायावाद का जन्म हुआ। छायावाद के आधार स्तम्भ के रूप में इनकी उपस्थिति को स्पष्टतः रेखांकित नहीं किया गया। छायावाद का जन्म एवम् छायावादी साहित्य के विकास में पं. मुकुटधर पाण्डेय जी की भूमिका निर्धारण हेतु

नवगठित राज्य छत्तीसगढ़ प्रकृति की सुरम्य गोद में सूर्य की तरह देदीप्यमान, हिंदुस्तान के क्रोड़ में अवस्थित है। महाकांतार, दंडकारण्य, कोसल, चेदीशगढ़ आदि प्रभृति संज्ञाओं से अभिहित छत्तीसगढ़ अपने पौराणिक एवम् ऐतिहासिक साम्य के लिए विश्व प्रसिद्ध है। एक ओर महानदी, शिवनाथ, इंद्रावती, हसदेव, तो दूसरी ओर अमरकंटक, मैकल, रामगिरि, जैसी गिरिश्रृंखलाओं से सुसज्जित छत्तीसगढ़ की पुण्य भूमि अपने जन—जीवन के चरित्र की उज्जवलता को शब्दबद्ध करता है। भूतकाल के भग्नावशेष यहाँ की बीते अनुभव की गाथा कहते हैं। आर्य और अनार्य दोनों को अद्भुत संगम स्थल छत्तीसगढ़ अपनी संस्कृति के उज्जवल एवम्

परिनिष्ठित अतीत की कहानी कहते हुए अपने स्वर्णिम इतिहास को और अधिक सार्थक बनाते हैं। भगवान बुद्ध का कर्मस्थली, श्री वल्लभाचार्य का जन्म सीली, छत्तीसगढ़ की पावन भूमि वही कोसल प्रदेश है, जहां के मार्ग से होकर श्रीराम वनवास गये थे और शिवरीनारायण नामक स्थान में शबरी का आतिथ्य ग्रहण किया था।

ऐतिहासिक शोध की अपेक्षा लिये छत्तीसगढ़ खरौद, रतनपुर, सिरपुर, राजिम, जाँजगीर, कवर्धा, रायपुर, सारंगढ़, सक्ती, दुर्ग आदि की भूमि का साक्ष्य लिये छत्तीसगढ़ की उत्थान पतन की कहानी कहती है। छत्तीसगढ़ की अतिशय विस्तृत क्षेत्र एवम् अधिकांश जनों में प्रयुक्त होने के कारण छत्तीसगढ़ी में अनेक भाषायी उपभेदों की सृष्टि हुई। बंगला, उड़िया, मराठी आदि के शब्द सीमावर्ती होने के कारण छत्तीसगढ़ी भाषा में घुलमिल गए। उर्दू, फारसी और अंग्रेजी के शब्द भी पूरे गौरव के साथ छत्तीसगढ़ी भाषा में अस्तित्व बनाए रखता है। वस्तुतः छत्तीसगढ़ में मुख्यतः अवधी, बघेली और ब्रजभाषा का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है। दो करोड़ से भी अधिक लोगों के द्वारा बोली जाने वाली भाषा छत्तीसगढ़ में, शब्दों के कई अर्थ गौरव समाहित हैं। छत्तीसगढ़ी भाषा और साहित्य पर कई शोध परक अध्ययन हुए हैं। छत्तीसगढ़ भाषा संपन्न भाषा है। भाषा और साहित्य एक दूसरे पर अवलंबित होते हैं। भाषा विकास की सहगामिनी होती है। अतीत में साहित्य सृजन की प्रक्रिया में संस्कृत भाषा की स्थापित प्रतिष्ठा के कारण इस आंचलिक भाषा को समुचित प्रतिष्ठा नहीं मिली। अलिखित एवम् लिखित साहित्य सजृन की परम्परा का प्रारंभ लगभग हजार वर्ष पूर्व हो चुका था। डॉ नरेन्द्र देव वर्मा ने अपने ग्रंथ ''छत्तीसगढ़ भाषा के उद्विकास'' में साहित्य परम्परा को क्रमशः गाथा युग, भक्ति युग और आधुनिक युग में विभाजित किया है। मध्य युग में अवधी और ब्रज भाषा के धार्मिक व्याख्यान तथा भक्ति पदो ंके प्रचार–प्रसार के कारण छत्तीसगढ़ी लेखन कम मात्रा में तथा विलंब से हुआ ।

छत्तीसगढ़ी का स्वर्ण युग, गाथा युग को माना जाता है। प्रेम और वीरता से परिपूर्ण गाथाओं की रचना काल का यह युग अपनी अलिखित, पीढ़ी–दर–पीढ़ी मौखिक रूप से संरक्षित गाथाओं के लिए प्रसिद्ध है। आधुनिक युग के पूर्वार्ध में लिपिबद्ध इन गाथाओं की भाषा परिपक्व एवम् अनूठे हैं। इस काल में प्रशस्ति गान, प्रेम–प्रधान गाथाएँ, धार्मिक और पौराणिक गाथाएँ, अलौकिक तथा चमत्कारपूर्ण घटनाओं की रचना हुई। इस काल में धार्मिक भावनाओं से ओतप्रोत भक्तिपूर्ण भावनाओं की रचना हुई। इस काल में छत्तीसगढ़ी साहित्य की निर्माण की प्रक्रिया में कबीर पंथ की छत्तीसगढ़ी शाखा तथा सतनाम पंथ के साहित्य प्रमुख हैं। आधुनिक युग में छत्तीसगढ़ी भाषा के साहित्य की विभिन्न विधाओं का विकास हुआ। काव्य के साथ–साथ गद्य के विविध प्रकारों के संवर्धन तथा परिवर्धन के लिए यह युग उर्वर सिद्ध हुआ।

छत्तीसगढ़ की काव्य परम्परा की अतिशय प्राचीनता की परम्परा को अभिव्यक्त करने में विभिन्न साहित्यिक विभूतियों का योगदान रहा है, जिनमें सर्वप्रथम विशुद्ध छत्तीसगढ़ी में काव्य सृजन करने वालों में पंडित सुन्दरलाल शर्मा का स्थान प्रथम है। छत्तीसगढ़ी को ग्राम्य भाषा के पद से उठाकर साहित्यिक भाषा के पद पर अधिष्ठित पं. सुन्दरलाल शर्मा ने ही किया। छत्तीसगढ़ की विशिष्ट ग्रामीण संस्कृति और सम्यता को स्वयं में समेटे हुए, इस पड़ाव के अनेक कवियों ने छत्तीसगढ़ भाषा को माननीय मनोभावों के संवहन योग्य बनाया। इस काल में छत्तीसगढ़ी काव्य लेखन परम्परा का गौरवपूर्ण मार्ग प्रशस्त हुआ। स्वाधीनता आंदोलनों के हलचलों के मध्य छत्तीसगढ़ी काव्य का दूसरा पड़ाव आरंभ होता है। इस काल के कवियों द्वारा महात्मा गांधी के दिव्य रूपों का चित्रण तथा उनके अहिंसात्मक सत्याग्रह का गुणगान किया गया है। राजनीतिक मतवादों का परिदर्शन करती हुई, महात्मा गांधी की नीति की वरीयता सिद्ध करती है। छत्तीसगढ़ी काव्य का तृतीय उन्मेष ''छत्तीसगढ़ी'' मासिक के प्रकाशन के साथ होता है।

छत्तीसगढ़ी भाषा के विकास का प्रारंभ होने के साथ–साथ विभिन्न साहित्यिक बैठकों व गोष्ठियों के माध्यम से छत्तीसगढ़ी भाषा की सभी विधओं का उत्तरोत्तर विकास हो रहा है। पत्र–पत्रिकाओं, आकाशवाणी, दूरदर्शन तथा कवि सम्मेलनों में छत्तीसगढ़ी कविता का प्रचार–प्रसार होने लगा है। वर्तमान में करीब एक सहस्त्र रचनाकार छत्तीसगढ़ी भाषा में काव्य रचना कर, छत्तीसगढ़ी भाषा साहित्य के विपुल भंडार को समृद्ध कर रहे हैं। छत्तीसगढ़ी भाषा के गद्य स्वरूप का विकास विभिन्न विधाओं में हुआ है। हीरालाल काव्योपाध्याय द्वारा लिखित छत्तीसगढ़ी बोली के व्याकरण के साथ छत्तीसगढ़ी गद्य के विकास का सूत्रपात होता है। 'छत्तीसगढ़ी व्याकरण' के अनेक प्रेमपरक, कथाओं के संकलन से कहानी विधा का जन्म होता है। छत्तीसगढ़ी उपन्यासों की रचना पर्याप्त विलंब से हुई। छत्तीसगढ़ी नाटक का आरंभ हीरालाल काव्योपाध्याय के ग्रंथ के बाइसवें अध्याय में संकलित वार्तालाप से होता है। नाटक और एकांकियों के क्षेत्र में भी अनेक रचनाएँ हुईं। इसके अतिरिक्त छत्तीसगढ़ी गद्य में जीवनी, निबंध, व्यंग्य, संस्मरण तथा अनेक साहित्यिक पत्र–पत्रिकाओं, में कहानी लेखन जैसी विधाओं का भी विकास हुआ। छत्तीसगढ़ी साहित्य की इन विधाओं का प्रारंभ यद्यपि आधुनिक है तथापि यह छत्तीसगढ़ी भाषा साहित्य को ऊँचाइयों पर प्रतिष्ठित करने में सक्षमहै।

छत्तीसगढ़ की समाजिक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि की अनेक गौरवशाली गाथाएँ हैं। संस्कृति, प्रकृति और कृति के बीच की कड़ी होती है, जो प्रतिमानों के समूह को व्यक्तियों में पीढ़ी–दर पीढ़ी हस्तांतरित करती है। कई शताब्दियों में निर्मित संस्कृति में जीवन का लक्ष्य और उसे पाने की भावना का दिग्दर्शन होता है। छत्तीसगढ़ की संस्कृति, साम्प्रदायिक सद्भाव व आध्यात्मिक उत्थान को प्रेरित करती हुई, भौतिकता के आडम्बरों से दूर भक्ति की शक्ति में सन्निहित है। छत्तीसगढ़ की जीवन शैली सहज सरल एवम् माधुर्यता के गुणों को आत्मसात कर अपनी गौरवशाली परम्परा को सृमद्ध कर रही है। नवगठित छत्तीसगढ़ राज्य में आदिवासी समुदाय की बहुलता है। इन आदिवासियों की अपनी पृथक संस्कृति होती है। ये जंगल में रहकर प्राकृतिक जीवन व्यतीत करते हैं। बस्तर, सरगुजा, रायगढ़ एवम् बिलासपुर के पहाड़ी एवम् पठारी जंगलों में निवासरत ये, अनेक उपजातियों में बंटे हैं। अनेक जातिगत संस्कृतियों से युक्त इनकी जीवन–शैली में, अनेक धार्मिक आस्था और विश्वास, जन्म–मृत्यु संस्कार, तथा विभिन्न सामाजिक संस्कार होते हैं। छत्तीसगढ़ की संस्कृति, आधार भूत स्तर पर संस्करों का ही प्रतिरूप है। कला, संगीत, लोक गीत, लोक सुभाषित (पहेली, मुहावरा, कहावतें), धर्म, संस्कार, आस्था, रूढ़ियाँ, प्रथाएँ, परम्पराएँ आदि संस्कृति को बहुमुखी आयाम प्रदान करते हैं। छत्तीगढ़ की जनता सहिष्णु, दयालु एवम् धार्मिक है, यहाँ की संस्कृति में ग्रामीण सरसता एवम् वन्य सहजता का सहज समावेश है। विश्व में प्राचीनतम्, संस्कृतियों की शरणास्थली रही छत्तीसगढ़ सामाजिक सरसता, राजनीतिक शुचिता, आत्मिक तथा भौतिक उन्नति के साथ उत्तरोत्तर विकास के पथ पर अग्रसर है। नवगठित राज्य में छत्तीसगढ़ी साहित्य के विकास की अपार संभावनाएँ हैं।

हिन्दी समालोचना के क्षेत्र में छायावाद शब्द का प्रचलन 1920 के लगभग हो चुका था। 1920 के काल निर्धारण में, उपलब्ध साहित्यिक सामग्री के आधार पर जबलपुर की 'श्री शारदा' नामक पत्रिका के सन् 1920 के जुलाई, सितम्बर, नवम्बर और दिसम्बर के अंकों में प्रकाशित मुकुटधर पाण्डेय द्वारा लिखित ''हिन्दी छायापाद' शीर्षक लेख के अंर्तगत चार निबंधों को छायावाद का स्वरूप निर्धारक निबंध माना गया। पृष्ठ 340 में उल्लेखित द्वितीय निबंध 'छायावाद क्या है' के अन्तर्गत उन्होंने छायावाद की प्रायः सभी मूल विशेषताओं अंतरंगता, कल्पना तत्व, प्रकृति प्रेम, दुख, अवसाद इत्यादि का उल्लेख किया है तथा छायावाद को मिस्टिसिज्म का पर्याय मानते हुए कहा है कि, ''छायावाद एक ऐसी मायामय सूक्ष्म वस्तु है कि शब्दों द्वारा उसका ठीक–ठाक वर्णन करना असम्भव है''। डॉ. नामवर सिंह के अनुसार ''छायावाद के कवि वस्तुओं को आसाधारण

दृष्टि से देखते हैं, चित्र दृश्य वस्तु की आत्मा का ही उतारा जाता है– उनकी कविता देवी की आँखे ऊपर की ही ओर उठी रहती हैं, मर्त्यलोक से उसका कम संबंध रहता है''।

पंडित मुकुटधर पाण्डेय जी ने '' छायावाद क्या है'' शीर्षक निबंध में छायावाद को स्पष्ट किया है। हिन्दी में यह एक बिल्कुल नया शब्द है। इसमें शब्द और अर्थ का सामंजस्य बहुत कम रहता है। कहीं–कहीं तो इन दोनों का परस्पर कुछ भी संबंध नहीं रहता। लिख कुछ और गया है, पर मतलब उसका कुछ और ही निकलता है। पाठक अपनी रूचि और समझ के अनुसार इसके भिन्न–भिन्न अर्थ निकाल सकता हैं। छायावादी रचना की सम्पूर्ण विशेषताएँ असाधारण दृष्टि पर टिकी रहती है। इसमें स्थैर्य और पूर्णत्व का नितान्त अभाव रहता है, जिससे वह क्षण में बिजली की तरह वस्तु का स्पर्श हुई निकल जाती है, पर यह स्पर्श इतना क्षीण होता है कि, प्रायः वस्तु को उसका ठीक–ठीक ज्ञान नहीं होता। अंतरंग दृष्टि ही छायावाद की विचित्र प्रकाशन रीति का मूल है। उसमें किसी दृश्य का ज्यों का त्यों चित्र उतारा जाता है, पर शब्द ऐसे प्रयोग किये जाते है, पर पल भर में वह अनंत आकाश में लीन हो जाता है। ऐसी कविताओं में शब्द सजीव होते हैं वे आदमियों की तरह चलते–फिरते और इशारा करते हैं। यथार्थ में छायावाद भाव राज्य की वस्तु है उसमें केवल संकेत से ही काम लिया जाता है। भाषा उसमें भाव प्रकाशन का एक गौण साधन मात्र है। छायावादी कवि भाषा प्रयोग में कुशल होते हैं, व्याकरण की भले ही उपेक्षा कर बैठे परन्तु काव्य सौन्दर्य कभी नष्ट नहीं होने देते। भाषा प्रायः सरल और बोल–चाल की होती है।

छायावाद को विभिन्न मत–मतान्तरों के अन्तर्गत रहस्वाद तथा स्वच्छंदतावाद से अभिहीत किया गया, परन्तु इन तीनों में से किसी भी वाद का समानधर्मा प्रतिरूप नहीं है। छायावाद, रहस्यवाद तथा स्वच्छंदता वाद में साम्य–वैषम्य पाया जाता है, इस वाद से तीनों को अलग नहीं किया जा सकता। ''सुमित्रानंदन पंत की 'मौन–निमंत्रण' कविता में अज्ञात की जिज्ञासा होने के कारण रहस्यवाद, अभिव्यक्ति की सूक्ष्मता के कारण छायावाद और कल्पनालोक में स्वच्छंद–विचरण करने के कारण स्वच्छंदतावाद है''। डॉ0 नामवर सिंह ने इस कविता का उदाहरण देते हुए कहा है कि, ''इस काव्य की विषय परिधि इतना व्यापक है कि, इन सभी प्रवृत्तियों का सहज अन्तर्भाव स्पष्ट परिलक्षित होता है। जिस प्रकार छायावाद मिस्टिसिज़्म अथवा रहस्यवाद का पर्याय नहीं है, उसी प्रकार छायावाद रोमान्टिसिज़्म अथवा स्वच्छंदतावाद का प्रतिरूप नहीं है''।

यद्‌यपि यह तथ्यगत सत्य है कि, हिन्दी के स्वचछंदवादी कविताओं में छायावादी स्वच्छंद प्रकृति का बोध होता है; परन्तु छायावाद अंग्रेजह के शैली, कीट्स, बायरन, आदि कवियों की रोमांटिक काव्य की अनुकृति का अंधानुकरण नहीं है; तथापि अंग्रेजी की रोमांटिक कविता का केवल बाह्य रूप एवम् शिल्पगत विशेषताओं का प्रभाव छायावादी कविता पर पड़ा। काव्यधारा के स्वरूपगत निर्धारण में कविता की मूल आत्मा या विषय का भाव प्रमुख होती है, अतः स्पष्ट है कि, छायावाद, विदेशी काव्य का रूपान्तर मात्र न होकर, अनुभूति की सहज अन्तःप्रेरणा है।

छायावाद एक ऐसा युगान्तरकारी शब्द है जिसने पं. मुकुटधर पाण्डेय जी को हिन्दी कविता के इतिहास में अमर कर दिया। छायावाद के प्रवर्तक के रूप में पं. मुकुटधर पाण्डेय जी को स्वयं प्रसाद जी को स्वयं प्रसाद जी ने मान्यता दी थी। स्वयं पाण्डेय जी के शब्दों में सन् 1936 में प्रसाद जी जब रूग्णावस्था में शैया–शायी थे, तब उन्होंने मुझसे कहा था, आप छायावाद के प्रथम कवि हैं, मैने कहा था, मैने आपका अनुकरण किया था। इस घटना का ज़िक्र पाण्डेय जी ने अपने संस्मरणात्मक लेख में विस्तारपूर्वक किया है। पाण्डेय जी ने छायावादी कविता को समुचित स्थान दिलाने के लिए परम्परा के पुनर्वास की कोशिश की। इस

कोशिश की कड़ी में वे किसी आलोचना की परवाह किये बिना अपनी नई पद्धति पर लिखते गये। मानव मन में रचित मनोभाव को अलौकिकता के स्तर पर रहस्य मंडित कर प्रकृति की निरछलता के साथ रचने का प्रयास किया। छायावाद के उद्भव के रहस्य के विषय में पाण्डेय जी का कहना था, कि ''बहुत दिनों बाद जब कुछ लोग मेरी रचना छायावाद के अन्तर्गत पढ़ने लगे और कुररी को गिनाने लगे; तब मुझे आश्चर्य हुआ, तब मैने अनुभव किया कि, छायावाद लिखा नहीं जाता, लिख जाता है''। वस्तुतः छायावाद पर लिखे गये लेखों से पाण्डेय जी को युगपरक– प्रसिद्धि मिली। निर्भीक विश्लेषणधर्मिता के साथ भाव परक रचना धारा की वकालत करते हुए पाण्डेय जी के विचार मार्मिक एवम् अर्थवान हैं।

छायावाद अपने युग की अनिवार्य क्रांति थी। राष्ट्र की आवश्यकताओं के अनुरूप छायावाद हिन्दी कविता की चरम उपलब्धि थी। छनद, भाषा शिल्प, नाद सौन्दर्य, रागात्मक भाव बोध, माधुर्य, कल्पना तथा छायावाद की समस्त प्रवृतियों के साथ छायावादी कवियों ने एक प्रतिमान उपस्थित किया, तथा अत्यंत सूक्ष्म परिष्कृति सौन्दर्य दृष्टि का उन्मेष कर हिन्दी काव्य चेतना को अभूतपूर्व समृद्धि प्रदान की। गोचर से अगोचर की ओर, प्रत्यक्ष से परोक्ष की ओरख चेतन से अन्तश्चेतन की ओर, छायावादी कवियों ने इस युग की परिधि का विस्तार मुखरता के साथ किया। छायावादी काव्यचेतना की पृष्ठभूमि में जो समसामयिक परिस्थितियाँ सक्रिय थीं, उनमें नवोन्मेष तथा नवजागरण का भावसाम्य था। भारतीय जन मानस अपने ऊपर लादी गई, इतिवृत्तात्मकता की परत को कुरेद कर अतीत के गौरव का स्पंदन करना चाहती थी। बुद्धिवाद और पूंजीवाद के विरूद्ध सहज परिणति के रूप में छायावाद का जन्म अन्तस की गइराई से हुआ। छायावादी कवियों ने स्वयं की वेदना को युग की वेदना से एकाकार कर मधुर भावनाओं की सुंदर अभिव्यक्ति की। यह एक विस्तृत तथा व्यापक जीवन दृष्टि थी, जिसकी अभिव्यक्ति सामान्य रूप से कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, आलोचना आदि सभी माध्यमों से हुई। अपेक्षाकृत कविता में ज़्यादा अभिव्यक्तियाँ, अभिव्यक्ति की प्रवाहता के कारण हुई। वस्तुतः छायावाद युगीन प्रवाह की चरम उपलब्धि है।

संदर्भ सूची

01. *''छायावाद और मुकुटधर पाण्डेय'' डॉ. बलदेव : वैभव प्रकाशन रायपुर , 2003*

02. *''छत्तीसगढी कविता के सौ साल'' डॉ. बलदेव : वैभव प्रकाशन रायपुर , प्रथम संस्करण 2011*

03. *''पं. मुकुटधर पाण्डेय , चयनिका '' पो. दिनेश पाण्डेय एवं बिहारी लाल साहू ; छत्तीसगढ हिन्दी गृन्थ अकादमी रायपुर प्रथम संस्करण 2007*

04. *'' छत्तीसगढी भाषा और लोक साहित्य'' बिहारी लाल साहू : भावना प्रकाशन दिल्ली 2003*

05. *'' छत्तीसगढी भाषा और साहित्य'' डॉ. सत्यभामा आडिल ; विकल्प प्रकाशन रायपुर 2004*

06. *''छायावाद '' नामवार सिंह : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली*

07. *''हिन्दी साहित्य का इतिहास'' डॉ. नगेन्द्र : नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली*

08. *''पूजा फूल; काव्य संग्रह'' पं. मुकुटधर पाण्डेय ब्रम्हा प्रेस, इटावा*

09. *''छायावाद एवं अन्य श्रेष्ठ निबन्ध''– डॉ. बलदेव श्री शारदा साहित्य सदन, रायगढ़*

10. *''विश्वबोध''– डॉ. बलदेवः श्री शारदा साहित्य सदन, रायगढ़*

11. *''छायावाद एवं अन्य निबन्ध'' पं. मुकुटधर पाण्डेय, मध्यप्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन, भोपाल*